जिह्वा की स्थिति के अनुसार हिन्दी के स्वरों को भाषा-विज्ञानियों ने रेखाचित्र के द्वारा प्रकट किया है —

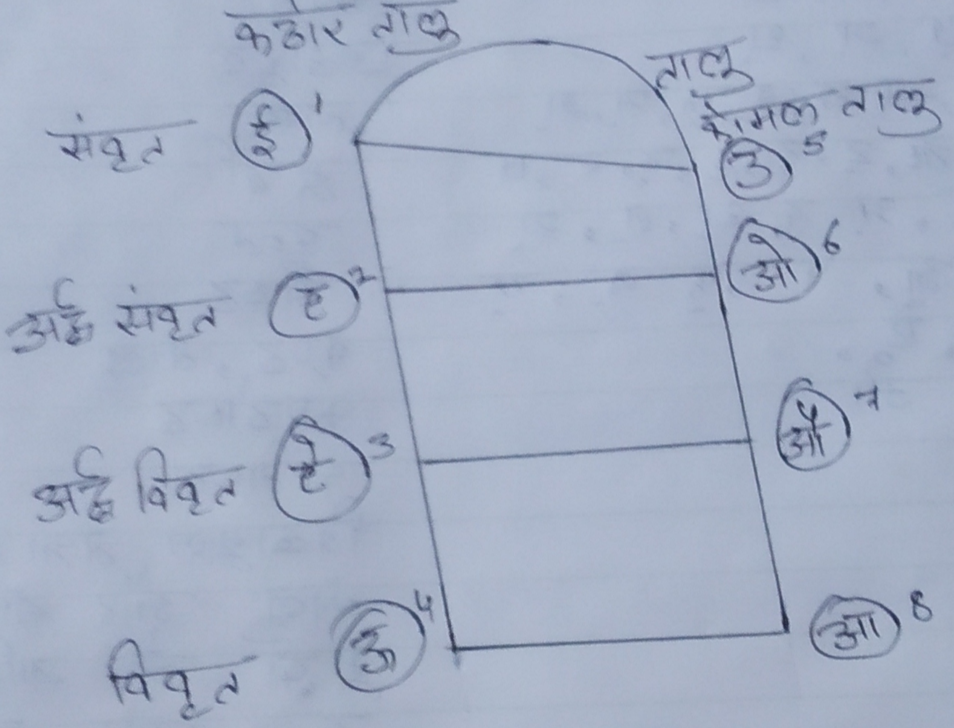

जीभ का अग्रभाग कितना उठता है, इसके अनुसार स्वर चार प्रकार के होते हैं —

① संवृत

② अर्द्ध संवृत

③ विवृत और ④ अर्द्ध विवृत।

संवृत स्वरों के उच्चारण में जीभ बहुत उठती है। विवृत स्वरों के उच्चारण में वह नहीं के बराबर उठती है। अर्द्ध संवृत और विवृत बीच की स्थितियाँ है।

जीभ का कौन सा भाग उठता है, इसके अनुसार स्वरों के तीन भेद हैं -

(i) जिन स्वरों के उच्चारण में जीभ का अगला भाग उठता है, उन्हें अग्र;

(ii) जिन स्वरों के उच्चारण में जीभ का मध्य भाग उठता है, उन्हें मध्य तथा

(iii) जिन स्वरों के उच्चारण में जीभ का पिछला भाग उठता है, उन्हें 'पश्च' कहते हैं।

हिन्दी के स्वर

- अ - यह ह्रस्व, अर्द्ध-विवृत स्वर है। इसको अर्द्ध-विवृत कहने का कारण यह है कि इसके उच्चारण में जीभ की स्थिति न तो बिल्कुल पीछे रहती है और न बिल्कुल आगे। जीभ का थोड़ा-सा ऊपर उठती है। जैसे - नरक।
- आ - यह दीर्घ, विवृत पश्च स्वर है। इसे विवृत कहा जाता है क्योंकि इसके उच्चारण में जीभ बिल्कुल पीछे रहती है और मुख द्वार खुल जाता है। अ तथा आ में केवल मात्रा का अंतर नहीं, वरन प्रयत्न और स्थान का भी अंतर है। जैसे - आराम।

• इ – यह ह्रस्व, अग्र स्वर है। इसके उच्चारण में जीभ का स्थान कुछ नीचा तथा बीच की ओर झुका रहता है, ओष्ठ ढील होकर फैले रहते हैं। जैसे – इमली

• ई – यह दीर्घ, अग्र स्वर है। इसके उच्चारण में जीभ का अग्र भाग ऊपर कठोर तालु के बहुत समीप पहुँच जाता है और ओष्ठ फैले रहते हैं। जैसे – ईमान

• उ – यह ह्रस्व, पश्चवृत्ताकार स्वर है। जीभ का पिछला भाग कण्ठ की ओर पर्याप्त मात्रा में ऊँचा उठता है तथा आगे मध्य की ओर कुछ-कुछ झुका रहता है। जैसे – उषा

• ऊ – यह दीर्घ, पश्चवृत्ताकार स्वर है। इसके उच्चारण में ओष्ठ काफी बन्द तथा गोल हो जाते हैं। जैसे – ऊपर

• ए – यह दीर्घ अर्द्ध-विवृत्त स्वर है। इसके उच्चारण में जीभ कुछ पीछे की ओर ऊपर उठी रहती है। जैसे – एकता यह स्वर 'अ' तथा 'इ' से मिलकर बना है।

• ओ – यह अर्द्ध-संवृत, दीर्घ पश्चवृत्ताकार स्वर है। इसमें ओष्ठ कुछ गोल हो जाते हैं परंतु ऊ से कम जैसे – ओस यह स्वर 'अ' तथा 'उ' से मिलकर बना है।

Page No.

स्वरों में सन्ध्यक्षर - वैदिक तथा लौकिक संस्कृत में ए, ऐ, ओ, औ को संन्ध्यक्षर माना गया है। इनके उच्चारण भी एक के स्थान पर दो कहे गए हैं, जैसे - ए, ऐ का कण्ठ - तालु तथा ओ, औ को कण्ठोष्ठ। ऐसा अनुमान किया जाता है कि इनका उच्चारण दो स्वरों के समान होता रहा होगा। इसलिए उन्हें सन्ध्यक्षर कहते हैं।

'ए' तथा 'ओ' का विवरण हम पहले दे चुके हैं, 'ऐ' तथा 'औ' का आगे दिया जा रहा है -

- ऐ - यह 'अ' तथा 'ए' के संयोग से बना है। इसमें उच्चारण शीघ्रता से 'अ' से 'ए' पर आ जाता है। जैसे - ऐसा
- औ - यह 'अ' तथा 'ओ' की संधि से बना है। इसका उच्चारण भी शीघ्रतापूर्वक 'अ' से 'ओ' पर आ जाता है।

- ऋ - का ठीक-ठीक उच्चारण क्या है, इसके संबंध में कुछ भी नहीं कहा जा सकता। परंतु महाभाष्य तथा प्रातिशाख्य के अध्ययन से इतना अवश्य पता चलता है कि वैदिक काल में 'र' ध्वनि भी इसके साथ उच्चरित होती थी। पाली तथा प्राकृत में 'ऋ' का प्रयोग नहीं प्राप्त होता।

'लृ' का उच्चारण

Teacher's Signature........................

• ऌ का व्यवहार वैदिक संस्कृत में होता था। परंतु वहाँ भी इसका प्रयोग अल्प मात्रा में होता था। लौकिक संस्कृत में भी 'ऌ' का प्रयोग नहीं के बराबर था। पालि, प्राकृत, अपभ्रंश तथा हिन्दी में 'ऌ' का प्रयोग बिल्कुल नहीं मिलता।

• विदेशी भाषाओं के प्रभाव से आने वाले शब्द हिन्दी में विदेशी भाषाओं के प्रभाव से भी कुछ स्वर आए है, इनमें सबसे प्रमुख 'ऑ' है इसका उच्चारण 'अ' तथा 'ओ' के बीच का है, जैसे 'लॉर्ड', 'ओवरऑल', 'मॉक' इत्यादि।

* **व्यंजन** :- वे अक्षर जिनके उच्चारण में ध्वनि फेफड़ों में अनुस्फुटित होकर मुख विवर के उच्चारण स्थानों को स्पर्श करती हुई निकलती है, व्यंजन कहलाते है। या जो ध्वनियाँ पूर्ण रूप से व्यक्त होती है, उन्हें 'व्यंजन' कहते हैं। जैसे - क, ख, आदि। प्रत्येक व्यंजन का उच्चारण स्वर की सहायता से किया जाता है। हिन्दी में इन व्यंजनों की संख्या 33 है।